IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"जनपद पौड़ी गढ़वाल में उच्चत्तर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।"

[1.] सुरजीत सिंह कंडारी,[2.] सरिता रावत ,

[1.]असिस्टेंट प्रोफेसर ,[2.] शोध छात्रा,

[1]शिक्षाशास्त्र बिभाग , [2] SSJ अल्मोड़ा

राजकीय महाविद्यालय हल्द्वानी शहर उत्तरांखण्ड भारत

सारांश

इस शोध पत्र के द्वारा माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इस शोध कार्य को पौड़ी जिले के दो विकास खण्डों के ग्रामीण एवं शहरी महाविद्यालयों के कुल 100 छात्रों का चयन यादृच्छिकी प्रतिचयन विधि द्वारा मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन हेतु किया गया। मूल्यों को पहचानना तथा उनका आत्मसात करना छात्रों के विवेक पर निर्भर करता है विवेक से ही व्यक्ति अच्छे व बुरे का भेद करता है और अच्छे गुणों का चयन करता व्यक्ति के विवेक को कोई भी शिक्षक गुरू, संत एवं शिक्षा प्रणाली उजागर नहीं कर सकती। मूल्य एवं विवेक व्यक्ति की अर्न्तनिहित क्षमतायें हैं। शिक्षा बिना विवेक के व्यर्थ है, बिना मूल्यों के शिक्षा अपराध है मूल्य ऐसे होने चाहिये कि हमारी राष्ट्रीय धरोहर और सार्वभौम लक्ष्यों तथा दृष्टिकोणों पर जोर दे। प्रस्तुत शोध के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों ग्रामीण व शहरी व बालक एवं बालिका के मूल्यों में सार्थक अन्तर है।

कूटशब्द :पौड़ी जिला, माध्यमिक शिक्षा स्तर, शहरी, ग्रामीण, छात्र–छात्राएँ, मूल्य

1 प्रस्तावना

शिक्षा बिना विवेक के व्यर्थ है, बिना मूल्यों के शिक्षा अपराध है तथा बिना मिशन के शिक्षा भार स्वरूप होती है। शिक्षा ही जीवन है जो हमें इस योग्य बनाती है जिससे अपना जीवन सुखी तथा समृद्विशाली बना सके तथा परिवार में आन्नदपूर्वक रह सके। जहॉ तक व्यक्ति एवं समाज की प्रगति का प्रश्न है उसके लिये हमारी शिक्षा मूल्यों पर आधारित होनी चाहिए। आज जो राष्ट अग्रणीय है वह परमाणु उर्जा के कारण नहीं है अपितु वहॉ के नागरिकों का राष्टीय चरित्र ऊॅचा है। यदि किसी राष्ट को शक्तिशाली बनना है तो उसे राष्टीय चरित्र को उन्नत करना होगा इसके लिये देश की शिक्षा को मूल्यों पर आधारित होनी चाहिये। शिक्षा व्यक्तिगत, सामाजिक एवं राष्ट्रीय विकास का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली साधन है यही कारण है कि प्रत्येक समाज अपने नागरिकों के समुचित विकास के लिये शिक्षा प्रक्रिया का उपयोग करके अपने ज्ञान, कौशल, अववोध, अभिवृत्तियॉ, मूल्य आदि का समावेश करने का प्रयास करता है। जिससे उसके नागरिक अपने सामाजिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन सफलता पूर्वक कर सकें इसके साथ शिक्षा समाज को एकीकृत एवं संगठित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। शिक्षा की प्रक्रिया की तीन क्रियायें शिक्षण, प्रशिक्षण तथा अनुदेशन होती हैं। इन्हीं के उपयोग से शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति की जाती है परन्तु मूल्यों का विकास इन क्रियाओं से सम्भव नहीं है। इस सम्बन्ध में यह कथन अधिक प्रचलित है तथा उचित भी प्रतीत होता है कि मूल्यों का शिक्षण नहीं किया जा सकता है अपितु मूल्यों को मन में बैठाया जाता है। मूल्यों को सीखा भी नहीं जा सकता है बल्कि मूल्यों को आत्मसात किया जाता । सुकरात का मानना है कि 'शिक्षा' स्वयं में नैतिक है और ज्ञान अपने में सदविचार है। शिक्षा की प्रक्रिया सकारात्मक होती है और गुणों के विकास से सम्बन्धित होती है।

2. अध्ययन की आवश्यकता

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल पौड़ी जिले वरन् सम्पूर्ण उत्तराखण्ड के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक मूल्यों का आकंलन किया जा सकेगा तथा ऐसे सुझाव शोध कार्य के उपरान्त दिये जा सकेंगे जिनका प्रयोग कर राज्य सरकार माध्यमिक शिक्षा स्तर पर योजना के क्रियान्वयन को प्रभावी ढंग से विकसित करने में समर्थ हो सकता है। मूल्यों से मानव जीवन, शान्तिपूर्ण, स्थायित्व, आध्यात्मिक, कल्पनात्मक अभिव्यक्ति से ओत–प्रोत होता है। इसके लिये शिक्षक को विद्यालय का वातावरण शिक्षक शिक्षार्थी सम्बन्ध अधिक घनिष्ठ तथा आदर सम्मान का भाव रहना आवश्यक है जिससे छात्र जीवन सुखमय व आनन्दमय रहे।

3.उदेश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मूल्यों का निर्धारण किया गया है। शिक्षा के उद्देश्यों के साथ–साथ मूल्यों का भी विकास होता है। प्रस्तुत शोध में निम्न उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है।

1- विद्यार्थियों के मूल्यों का अध्ययन करना है।
2- ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मूल्यों की तुलना करना।
3- कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के मूल्यों की तुलना करना।

4- बालक एवं बालिकाओं के मूल्यों की तुलना करना।

4. शोध अध्ययन की परिकल्पना

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु परिकल्पना का निर्धारण किया गया हैं।

1- पौड़ी गढवाल जनपद के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2- पौड़ी गढवाल जनपद के कला एवं विज्ञान वर्ग विद्यार्थियों के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3- पौड़ी गढवाल जनपद के बालक एवं बालिका विद्यार्थियों के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

5. शोध अध्ययन की परिसीमाएँ

1- प्रस्तुत शोध अध्ययन में उत्तराखण्ड के पौड़ी जनपद के विद्यार्थियों को लिया गया है।
2- प्रस्तुत शोध अध्ययन में उत्तराखण्ड बोर्ड के विद्यार्थियों को लिया गया है।
3- प्रस्तुत शोध अध्ययन में राजकीय सहायता प्राप्त विद्यालयों को लिया गया है।
4- प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल मूल्यों को ही अध्ययन हेतु लिया गया है।

6. अनुसंधान की विधि

अनुसंधानकर्ता ने प्रस्तुत शोध के लिए विभिन्न विधियों का अध्ययन किया है। यह कहना कठिन है कि उनमें से कौन से विधि सर्वाधिक उपयुक्त है, प्रत्येक विधि में कुछ गुण तथा कमियां होती है। इसलिए यह कहना कठिन है, कि एक अनुसंधान विधि दूसरी अनुसंधान विधि से उत्कृष्ट या निकृष्ट है। प्रस्तुत शोध में अनुसंधान कर्ता ने अध्ययन के उद्देश्य और साधनों की प्रकृति को दृष्टिगत रखते हुए अनसंधान के वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि (नॉमेर्टिव सर्वे मैथर्ड ऑफ रिसर्च) का प्रयोग किया है।

6.1 सर्वेक्षण विधि –

प्राथमिक स्त्रोतों से प्रदत्तों के संकलन एवं पूर्व संचालित प्रदत्तो के सत्यापन हेतु शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर के विद्यालयों का सर्वेक्षण किया गया है।

6.2 शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध हेतु प्रमापीकृत शोध उपकरण डॉ० जे०पी० शैरी एवं डॉ आर0पी0 वर्मा द्वारा निर्मित मूल्य परीक्षण प्रपत्र प्रयुक्त किए गए है।

7. न्यादर्श चयन की विधि

न्यायदर्श के चयन की अनेक विधियां है। प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने न्यायदर्श चयन में यादृच्छिकी न्यादर्श चयन विधि को अपनाया है जो संभाविता प्रतिचयन विधि का ही एक प्रकार है।

8. **न्यादर्श चयन**

अनुसंधान तथा शोध के प्रयोग का प्रारूप न्यादर्श की प्रविधि पर आधारित होता है। एक उत्तम प्रकार के शोध कार्य में न्यादर्श तथा उसकी जनसंख्या संबंधी समस्त सूचनाओं को दिया जाता है। शोध कार्य को सार्थक करने के लिए न्यादर्श का चयन किया जाता है। न्यादर्श के रूप में चयनित पौड़ी गढ़वाल जिले के जिले के माध्यमिक विद्यालयों की सूची बनाकर उसमें से से 2 शहरी –2 ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय कुल 4 विद्यालयों से 50 छात्र व 50 छात्राएं कुल 100 छात्रों का चयन यादृच्छिकी न्यादर्श चयन द्वारा अध्ययन हेतु किया गया है।

8. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण एवं अध्ययन शोधकर्ता को नवीनतम ज्ञान के शिखरों पर ले जाता है, जहाँ उसे अपने क्षेत्र से सम्बन्धित निष्कर्षो एवं परिणामों का मूल्यांकन करने का अवसर प्राप्त होता है तथा यह ज्ञात होता है कि ज्ञान के क्षेत्र में कहाँ रिक्तियाँ है, कहाँ निष्कर्ष–विरोध है कहाँ अनुसंधान की पुनः आवश्यकता है। जब वह दूसरे शोधकर्ताओं के अनुसंधान–कार्य की जाँच एवं मूल्यांकन करता है तो उसे बहुत सी अनुसंधान विधियों, बहुत से तथ्यों, सिद्धान्तों, संकल्पनाओं एवं सन्दर्भ ग्रन्थों का ज्ञान होता है जो उसके अपने अनुसंधान में सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन किसी अनुसन्धानकर्ता के लिये समस्या के मूल तक पहुँचने का महत्वपूर्ण साधन है।किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के मुल्यों की वर्तमान स्थिति पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है।

आलपोर्ट वर्नन (1968)भटनागर (1963)कुमार (1964)शुक्ला (1965)राय (1980)**गर्ग (1983)शर्मा (1990)अहमद (1974)प्रधान (1994)रानू (1995)**पंजाब विश्व विद्यालय **वर्मा एवं अन्य (1995)शुक्ला (1996)सिंह एवं गुप्ता (1996)मार्गन, डब्ल्यू एवं स्टैन, एस0 (2001)**University Research in Denmark(2008)

9. शोध क्षेत्र का परिचयः

पौड़ी जिला भारत वर्ष के पर्वतीय राज्य उत्तराखण्ड के 2945′ से 3015′ अक्षांश एवं 7824′ पूर्वी देशांतर से 7923′ पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। पौड़ी जिले का कुल क्षेत्रफल 5230 वर्ग कि.मी. है। प्रशासकीय दृष्टि से पौड़ी जिले में पौड़ी, लैन्सीडाउन, कोटद्वार, एवं थलीसैण सहित कुल 13 जिले हैं। तथा 15 विकासखण्ड है। पौड़ी गढ़वाल की स्थलाकृति बडी बीहड है और भाबर की संकीर्ण पटी को छोडकर पूरा क्षेत्र पहाड़ी है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मध्य 'धार्मिक मूल्य पर अंतर की सार्थकता

मूल्य	ग्रामीण विद्यार्थी		शहरी विद्यार्थी		टी–मूल्य
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
धार्मिक मूल्य	11.02	3.16	12.26	3.39	1.92 *

*.01 स्तर पर सार्थक अंतर है।

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मध्य धार्मिक मूल्य पर प्राप्त टी–मूल्य (1.92) है, जो सार्थकता के दोनों ही स्तर 0.05 एवं 0.1 पर तालिका मूल्य से कम है। इस प्रकार शून्य परिकल्पना स्वीकृत हुई। इसका तात्पर्य यह है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मध्य धार्मिक मूल्य पर सार्थकता के स्तर 0.05 एवं 0.01 पर सार्थक अंतर नहीं है। इससे स्पष्ट होता है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों का धार्मिक मूल्यों का विकास एक समान रूप से हुआ है।

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मध्य 'सामाजिक मूल्य' पर अंतर की सार्थकता

मूल्य	ग्रामीण विद्यार्थी		शहरी विद्यार्थी		टी–मूल्य
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
सामाजिक मूल्य	17.18	3.28	14.94	4.18	3.02 *

*.01 स्तर पर सार्थक अंतर है।

इसका अर्थ यह है कि ग्रामीण विद्यार्थी शहरी विद्यार्थियों की अपेक्षा सामाजिक मूल्यों के प्रति अधिक सजग एवं गंभीर है।

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मध्य 'प्रजातांत्रिक मूल्य' पर अंतर की सार्थकता

मूल्य	ग्रामीण विद्यार्थी		शहरी विद्यार्थी		टी–मूल्य
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
प्रजातांत्रिक मूल्य	11.34	4.02	18.08	3.28	5.30 *

*.01 स्तर पर सार्थक अंतर है।

इसका अर्थ यह है कि शहरी विद्यार्थी ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा प्रजातांत्रिक मूल्यों के प्रति अधिक जागरूक है।

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मध्य 'पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य' पर अंतर की सार्थकता

मूल्य	ग्रामीण विद्यार्थी		शहरी विद्यार्थी		टी–मूल्य
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य	7.66	3.22	10.36	3.35	4.156 *

*.01 स्तर पर सार्थक अंतर है।

इसका अर्थ यह है कि शहरी विद्यार्थियों में ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य अधिक प्रभावी है।

निष्कर्ष :

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में धार्मिक मूल्य का विकास एक समान रूप से हुआ है।

ग्रामीण एवं शहर विद्यार्थियों में सामाजिक मूल्य एक समान रूप से विकसित नहीं है। शहरी विद्यार्थियों की अपेक्षा ग्रामीण विद्यार्थियों में सामाजिक मूल्य अधिक विकसित हुए है।

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के प्रजातांत्रिक मूल्य समान रूप से विकसित नहीं है। ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा शहरी विद्यार्थियों में प्रजातांत्रिक मूल्य अधिक विकसित है।

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में सौंदर्यात्मक मूल्य समान रूप से विकसित नहीं है। ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा शहरी विद्यार्थियों में सौंदर्यात्मक मूल्य अधिक विकसित है।

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में अर्थ मूल्य समान रूप से विकसित नहीं है। ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा शहरी विद्यार्थियों में अर्थ मूल्य अधिक विकसित है।

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में ज्ञान मूल्य समान रूप से विकसित नहीं है। ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा शहरी विद्यार्थियों में ज्ञान मूल्य अधिक विकसित है।

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में सुख मूल्य का विकास एक समान रूप से हुआ है।

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में पावर मूल्य समान रूप से विकसित नहीं है। ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा शहरी विद्यार्थियों में पावर मूल्य अधिक विकसित हुए हैं।

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य समान रूप से विकसित नहीं हैं। ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा शहरी विद्यार्थियों में पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य अधिक विकसित हुए हैं।

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में स्वास्थ्य मूल्य समान रूप से विकसित नहीं हैं। ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा शहरी विद्यार्थियों में स्वास्थ्य मूल्य अधिक विकसित हुए हैं।

संदर्भ

1. अग्रवाल वी0 वैल्यू सिस्टम एण्ड डायमेन्शन ऑफ यूनिवर्सिटी स्इडेन्टस ऑफ यू0पी0।
2. आस्थना, विपिन (1977) : 'मनोविज्ञान शोध विद्यार्थी एव प्रकाशक : विनोद पुस्तक मंदिर कार्यालय : रागेय राघव, आगरा–2
3. चौबे, एस0पी0 (1994) : मनोविज्ञान और शिक्षा, लक्ष्मी नारायण, अग्रवाल, आगरा, पृ093
4. गैरिट, एच0ई0 (1973) : स्टेटिस्टक इन साइक्लोजीकल ऐब्लूऐशन बम्बई बेफक्सि फेयर्स एण्ड सोमेन्स प्राइवेट लिमिटेड, पृ0363
5. गुड, सी0वी0 स्केटस डी0 'मैथर्डस ऑफ रिसर्च' न्यूयार्क एपलटैन कन्टरी क्राटस
6. जोशी, एम0सी (1968) सामान्य मानसिक योग्यता परीक्षण (ए टेस्ट ऑफ जनरल मेन्टल एविलिटी) वाराणसी, रूपा साइकोलाजिकल सेन्टर
7. खरे, पी0सी0 (1868) एजुकेशनल डिफरेन्सेज इन लाइफ वैज्यूज, इण्डियन साइकोलोजिकल रिव्यू 4,2 पृ0104–109
8. कुरेसिया, रमेशचंद्र, 'शिक्षा प्रशासन' विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, मुद्रण रवि मुद्राणालय, आगरा–2, पृ040,49
9. कपिल, एच0के0 (1984), अनुसंधान विधियां हर प्रसाद भार्गव, 41230 कचहरी घाट, अगारा–4, पृ0194
10. कॉल, लोकेश (1968), मैथडोलौजी ऑफ ऐजुकेशन रिसर्च, विकास पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड।
11. लाल, रमन एवं पलोड़ सुनीता (2010) शैक्षिक चिंतन एवं प्रयोग (उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक), आर0लाल बुक डिपो, मेरठ, पृ0694
12. माथुर, एस0एस0 (1991) शिक्षा मनोविज्ञान प्रकाशन विनोद पुस्तक मंदिर कार्यालय : टांगेय राघव मार्ग, आगरा–2, मुद्रण कैलाश प्रिंटिस प्रेस
13. महेश, भार्गव, आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण मापन हर प्रसाद भार्गव 4/230 कचहरी घाट, आगरा

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation